तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.)

राजभाषा हिंदी पत्रिका - 2023 (अंक-1)

“ सजल ”

INTERNATIONAL YEAR OF MILLETS 2023

G20 भारत 2023 INDIA वसुधैव कुटुम्बकम् ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

आज़ादी का अमृत महोत्सव

प्रथम प्रकाशन

वर्ष-2023 (अंक-1)

प्रकाशक

मुख्यालय

तटरक्षक क्षेत्र (उत्तर पूर्व)

कोलकाता

संपादन-मण्डल

उप महानिरीक्षक डी जॉन मनोज

मुख्य स्टाफ अधिकारी (का. व प्र.)

श्री संजीत कुमार

वरिष्ठ असैन्य कार्मिक अधिकारी

क्षेत्रीय हिन्दी अधिकारी

श्री देवेन्द्र सिंह

वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्री गुड्डू कुमार शर्मा

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

भारतीय तटरक्षक

सुरक्षित जीवन... सुरक्षित तट... सुरक्षित सागर

महानिरीक्षक इकबाल सिंह चौहान, त.प.

कमांडर, तटरक्षक (उ.पू.)

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.), कोलकाता अपनी राजभाषा गृहपत्रिका ' सजल ' वर्ष-2023 से ऑनलाइन जारी करने जा रहा है। तटरक्षक क्षेत्र (उत्तर पूर्व) का क्षेत्रीय कमांडर होने के कारण मुझे गर्व है कि मेरी सभी अधीनस्थ इकाइयाँ राजभाषा कार्यान्वयन में निरंतर प्रगति कर रही हैं।

यह अत्यंत गर्व एवं हर्ष का विषय है कि तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उत्तर पूर्व) को क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र) के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत 'ग' क्षेत्र में संघ सरकार की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु वर्ष 2021-22 के लिए तृतीय पुरस्कार एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-4), कोलकाता की दूसरी छमाही बैठक में विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया।

यह ध्यातव्य है कि स्वाधीनता के बाद देश की संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को सर्वसम्मति से संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार करते हुए राजभाषा हिंदी के संदर्भ में प्रावधान किया जिसका संविधान के भाग 17 के अनुच्छेद 120, 210 एवं 343 से 351 तक में उल्लेख मिलता है। अत: संवैधानिक तौर पर हिंदी केवल भारतवर्ष की राजकाज की ही भाषा नहीं है अपितु यह राष्ट्रीय एकता और अखण्डता का भी प्रतीक है और यह हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आंदोलनों तथा अभिव्यक्ति की भाषा है।

तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) द्वारा ऑनलाईन राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन एक शुभ संकेत है जो हम सभी में एक सकरात्मक चेतना और उज्ज्वल भविष्य के प्रति आस्था का बीजारोपण करता है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के उपलक्ष्य में हिंदी पत्रिका को ऑनलाइन जारी करने के लिए संपादक मंडल को बहुत-बहुत हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई।

(इकबाल सिंह चौहान)
महानिरीक्षक
कमांडर
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

उप महानिरीक्षक हिमांशु नौटियाल, त.प.
स्टाफ प्रमुख

संदेश

मेरे लिए यह बहुत ही हर्षोल्लास का विषय है कि वर्ष 2023 में एक नवीन पहल के तहत राजभाषा ई-पत्रिका का बीजारोपण तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) द्वारा किया जा रहा है| वित्त मंत्रालय के आदेश का अनुपालन करते हुए हमने पेपर-रहित और डिजिटल दुनिया को अंगीकार किया है। इसी पहल के तहत अब पत्रिकाओं इत्यादि का प्रकाशन भी डिजिटल रूप में होने लगा है और हम अब वर्चुअल दुनिया के आदि हो चुके हैं।

वर्चुअलटी और डिजिटलीकरण के दौर में राजभाषा हिंदी का भी विकास कई दृष्टिकोणों से सराहनीय है। इस तथ्य में कोई दो राय नहीं है कि 'अंग्रेजी' भाषा ईस्ट इंडिया कंपनी अर्थात पराजित मनोवृत्ति की भाषा है जिससे निजात पाने के लिए हम प्रयासरत्त हैं। इस प्रयास ने इस चेतना को गति प्रदान की है कि राजभाषा हिंदी हमारे लिए गौरव की बात है। पत्रिका को ऑनलाइन जारी करने के लिए संपादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई।

हिमांशु नौटियाल

(हिमांशु नौटियाल)
उप महानिरीक्षक
स्टाफ प्रमुख
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

उप महानिरीक्षक डी जॉन मनोज
मुख्य स्टाफ अधिकारी (का. एवं प्र.)

संदेश

मेरे लिए यह बहुत ही गर्व और उत्साह का विषय है कि तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) की राजभाषा हिंदी ई-पत्रिका का लोकार्पण हो रहा है। हिंदी वह कड़ी है जिसने हम सभी को जोड़ा है। यह वह मंच है जहां पर हम अपनी कविताओं, कहानियों और लेखों के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं और अपने विचारों का आदान - प्रदान करते हैं।

यह एक सराहनीय प्रयास है कि भारतीय तटरक्षक विभिन्न संक्रियात्मक कार्यों का बखूबी निष्पादन करने के साथ ही कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए विशिष्ट भूमिका निभा रहा है| तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) की राजभाषा टीम ने इस मुख्यालय की राजभाषा पत्रिका को जारी करने की पहल की है और डिजिटल उपकरणों की मदद से राजभाषा ई-पत्रिका का प्रकाशन भारतीय तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) के वेब पेज पर संभव हो पाया है।

पत्रिका को ऑनलाइन जारी करने के लिए संपादक मंडल को एवं पत्रिका के इस अंक के सभी रचनाकारों को बहुत-बहुत बधाई।

जॉन मनोज

(डी जॉन मनोज)
उप महानिरीक्षक
मुख्य स्टाफ अधिकारी (का.एवं प्र.)
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	हिंदी प्रोत्साहन योजनाएँ	1-5
2.	जिंदगी कल फिर आना	6
3.	सूक्तियाँ	7
4.	आत्मविश्वास सफलता की कुंजी है	10
5.	तटरक्षक के सैनिक	11
6.	विनम्रता लोहे के द्वार खोलती हैं	12
7.	तटरक्षक शक्ति	13
8.	हिंदी भाषा	14-15
9.	दो पल की जिंदगी है	16
10.	सपनों में रख आस्था	17
11.	शिक्षक	18
12.	दोस्ती	19-20
13.	बेरोजगारी	21
14.	जिंदगी	22
15.	लोगों ने कहा	23
16.	महात्मा गाँधी	24-25
17.	हर चमकती चीज सोना नहीं होती	26
18.	लघु कहानी	27
19.	लोग पूछते हैं	28
20.	माँ का कर्ज़	29
21.	हमारा किसान	30
22.	सबसे अच्छा मेरा मोबाइल	31
23.	हिम्मत हारे मत बैठो	32
24.	जीवन एक चुनौती है स्वीकार करों	33
25.	सैनिक	34
26.	लैटिन शब्द जो अँग्रेजी का हिस्सा हैं	35
27.	एक से सौ तक हिंदी में गिनती	36
28.	हिंदी में दिनों के नाम	37
29.	हिन्दी बोले जाने और लिखे जाने के आधार पर देश के राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को तीन क्षेत्र	38
30.	फोटो गैलरी - तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) की राजभाषा संबंधी गतिविधियां	39-40

हिंदी प्रोत्साहन योजनाएँ

(I) हिंदी शिक्षण योजना की परीक्षाएँ उतीर्ण करने पर केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों को मिलने वाले वैयक्तिक वेतन, नकद पुरस्कार आदि प्रोत्साहन

वैयक्तिक वेतन- हिन्दी भाषा, हिंदी टंकण एंव आशुलिपि की परीक्षाएँ उतीर्ण करने पर केंद्र सरकार के अधिकारियों/कर्मचारियों को 12 महीने की अवधि के लिए एक वेतन वृद्धि के बराबर का वैयक्तिक वेतन दिया जाता है।

(क) **प्रबोध परीक्षा** – वैयक्तिक वेतन केवल उन्हीं अराजपत्रित कर्मचारियों को दिया जाता है जिनके लिए प्रबोध पाठ्यक्रम अंतिम पाठ्यक्रम के रूप में निर्धारित किया गया है और जो इस परीक्षा को 55% या अधिक अंक लेकर उतीर्ण करते हैं। राजपत्रित अधिकारियों को प्रबोध परीक्षा उतीर्ण करने पर वैयक्तिक वेतन नहीं दिया जाता है।

(ख) **प्रवीण परीक्षा**- वैयक्तिक वेतन केवल उन्हीं अधिकारीयों/कर्मचारियों को दिया जाता है जिनके लिए प्रवीन पाठ्यक्रम अंतिम पाठ्यक्रम के रूप में निर्धारित किया गया है।

(i) अराजपत्रित कर्मचारियों को 55% या अधिक अंक लेकर प्रवीण परीक्षा उतीर्ण करने पर

(ii) राजपत्रित अधिकारियों को 60% या अधिक अंक लेकर प्रवीण परीक्षा उतीर्ण करने पर

(ग) **प्राज्ञ परीक्षा** - वैयक्तिक वेतन केवल उन्हीं अधिकारीयों/कर्मचारियों (राजपत्रित/ अराजपत्रित) को प्राज्ञ परीक्षा उतीर्ण करने पर दिया जाता है। जिनके लिए पाठ्यक्रम अंतिम पाठ्यक्रम के रूप में निर्धारित किया गया है।

(घ) **हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण**- हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण की परीक्षा उतीर्ण करने वाले केंद्र सरकार के अराजपत्रित कर्मचारियों को एक वेतन वृद्धि के बराबर 12 महीने की अवधि के लिए वैयक्तिक वेतन दिया जाता है। इसके अतिरिक्त सहायक, अनुवादक, अवर श्रेणी लिपिक तथा प्रवर लेखा परीक्षक, जिनके लिए टंकण का प्रशिक्षण अनिवार्य नहीं है पर उपयोगी है को अवर श्रेणी लिपिकों को भांति ही उक्त वित्तीय प्रोत्साहन तथा अन्य सुविधाएँ इस सबंध में जारी की गई विभिन्न शर्तों के अधीन दी जाती हैं।

(ङ) **हिंदी आशुलिपि** –

(i) अराजपत्रित हिंदी भाषी आशुलिपिकों को हिंदी आशुलिपि की परीक्षा उतीर्ण करने पर 12 महीने के लिए एक वेतन वृद्धि, जो आगामी वेतन वृद्धि में मिल दी जाती है, के बराबर वैयक्तिक वेतन दिया जाता है।

(ii) राजपत्रित आशुलिपिकों को 90% या अधिक अंक लेकर हिंदी आशुलिपि परीक्षा उतीर्ण करने पर वैयक्तिक वेतन दिया जाता है।

जिन आशुलिपिकों (राजपत्रित/अराजपत्रित दोनों) की मातृभाषा हिंदी नहीं है, उन्हें हिंदी आशुलिपि परीक्षा उतीर्ण करने पर दो वेतन वृद्धियों के बराबर वैयक्तिक वेतन दिया जाता है| ये वेतन वृद्धियां भावी वेतन वृद्धियों में मिलाई जाएँगी। ऐसे कर्मचारी पहले वर्ष दो वेतन वृद्धियों के बराबर और दूसरे वर्ष पहली वेतन वृद्धि को मिला दिए जाने पर केवल एक वेतन वृद्धि के बराबर वैयक्तिक वेतन प्राप्त कर सकते हैं।

टिप्पणी: जिस कर्मचारी को सेवाकालीन हिंदी प्रशिक्षण से छूट मिली हुई हो उस कर्मचारी को सम्बन्धित परीक्षा उतीर्ण करने पर किसी प्रकार के वित्तीय लाभ/प्रोत्साहन नहीं मिलेंगे।

नगद पुरस्कार- हिंदी प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ, हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण और हिंदी आशुलिपि की परीक्षाएँ अच्छे अंकों से उतीर्ण करने पर पात्रता के अनुसार निम्नलिखित नकद पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं, जिनकी वर्तमान दरें निम्नानुसार हैं-

(1) **प्रबोध**

- 70 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर रुपये 1600/-
- 60 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 70 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर रुपये 800/-
- 55 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 60 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर रुपये 400/-

(2) **प्रवीण**

- 70 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर रुपये 1800/-
- 60 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 70 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर रुपये 1200/-
- 55 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 60 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर रुपये 600/-

(3) **प्राज्ञ**

- 70 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर रुपये 2400/-
- 60 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 70 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर रुपये 1600/-
- 55 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 60 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर रुपये 800/-

(4) **पारंगत**

केंद्र सरकार के कार्मिकों को सरकारी काम हिन्दी में करने में दक्ष बनाने हेतु राजभाषा विभाग के अधीनस्थ कार्यालय केंद्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा "पारंगत" पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण आरंभ किया गया है। वित्तीय वर्ष 2021-22 से "पारंगत" पाठ्यक्रम को व्यापक व लोकप्रिय बनाने के लिए केंद्र सरकार के कार्मिकों को पारंगत प्रशिक्षण कार्यक्रम में उत्तीर्ण होने पर निम्नलिखित एकमुश्त प्रोत्साहन राशि प्रदान करने का निर्णय लिया गया है {राजभाषा विभाग का कार्यालयी आदेश संख्या 21034/69/2008-रा.भा.(प्रशि.) दिनांक 21 दिसंबर 2020}:-

- 55% से 59% अंक प्राप्त करने पर रुपये 4000/-
- 60% से 69% अंक प्राप्त करने पर रुपये 7000/-
- 70% से अधिक अंक प्राप्त करने पर रुपये 10,000/-

(4) **हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण**

- 97 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर रुपये 2400/-
- 95 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 97 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर रुपये 1600/-
- 90 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 95 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर रुपये 800/-

(5) **हिंदी आशुलिपि**

- 95 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर रुपये 2400/-
- 92 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 95 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर रुपये 1600/-
- 88 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 92 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर रुपये 800/-

(6) **निजी प्रयत्नों से हिंदी शिक्षण योजना की हिन्दी भाषा, हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि की परीक्षाएँ उतीर्ण करने पर एकमुश्त पुरस्कार**

- हिंदी शिक्षण योजना की प्रबोध परीक्षा रुपये 1600/-
- हिंदी शिक्षण योजना की प्रवीण परीक्षा रुपये 1500/-
- हिंदी शिक्षण योजना की प्राज्ञ परीक्षा रुपये 2400/-

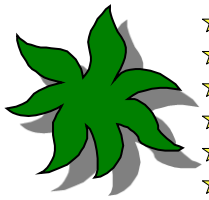

- हिंदी शिक्षण योजना की हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण परीक्षा रुपये 1600/-
- हिंदी शिक्षण योजना की हिंदी आशुलिपि की परीक्षा रुपये 3000/-

जिन कर्मचारियों को हिंदी के सेवाकालीन प्रशिक्षण से छूट प्राप्त है उन्हें सम्बन्धित स्तर की हिंदी परीक्षा उतीर्ण करने पर नकद एंव एकमुश्त पुरस्कार देय होंगे।

हिंदी शिक्षण योजना द्वारा आयोजित हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि परीक्षाएँ उतीर्ण करने पर केंद्र सरकार के कर्मचारियों को मिलने वाले वित्तीय प्रोत्साहन तथा वैयक्तिक वेतन, नकद पुरस्कार से सम्बन्धित आदेश उन सभी कर्मचारियों पर भी लागू होंगें जो हिंदी शिक्षण योजना द्वारा आयोजित हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि की परीक्षाएँ इलेक्ट्रॉनिक टापराइटर या कंप्यूटर का प्रयोग करके उतीर्ण करते हैं।

टिप्पणी:

1. एकमुश्त पुरस्कार प्रचालन कमर्चारियों के अतिरिक्त केवल उन्हीं कमर्चारियों को दिया जाएगा जो ऐसे स्थानों पर तैनात हैं जहाँ हिंदी शिक्षण योजना के प्रशिक्षण केंद्र नहीं है अथवा जहाँ सम्बन्धित पाठ्यक्रम के प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं है।

2. जो प्रशिक्षार्थी निजी प्रयत्नों से हिंदी शिक्षण योजना की हिन्ही भाषा, हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि परीक्षाएँ उतीर्ण करते हैं उनको एक मुश्त पुरस्कार के आलावा नकद पुरस्कार प्रदान करते समय निर्धारित किये गए प्रतिशत से पांच प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर भी नकद पुरस्कार राशि प्रदान की जाएगी।

II. अंग्रेजी के अतिरिक्त हिंदी में भी सरकारी काम-काज करने के लिए आशुलिपिकों तथा टंककों के प्रोत्साहन भत्ता

अंग्रेजी के अतिरिक्त हिंदी में भी सरकारी काम-काज करने के लिए आशुलिपिकों तथा टंककों के प्रोत्साहन भत्ता प्रतिमाह क्रमशः: 240/- रूपये व 160/- देने का प्रावधान है। {आदेश सं. 13034/12/2009-रा.भा.(नीति)}

III. <u>सरकारी कामकाज (टिप्पण/आलेखन) मूल रूप से हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना</u>:-

केंद्र सरकार के प्रत्येक मत्रालय/विभाग/संम्बंध कार्यालय के लिए स्वतंत्र रूप से सरकारी काम मूल रूप से हिंदी में करने के लिए पुरस्कार राशि निम्न प्रकार है:-

पहला पुरस्कार (2 पुरस्कार) : प्रत्येक 5000/- रुपये

दूसरा पुरस्कार (3 पुरस्कार) : प्रत्येक 3000/- रुपये

तीसरा पुरस्कार (5 पुरस्कार) : प्रत्येक 2000/- रुपये

<u>संकलन</u> -

गुड्डू कुमार शर्मा
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

जिंदगी कल फिर आना

जिंदगी कल फिर आना,
आते समय खुशियों की सौगात लाना।
अगर थोड़े गम भी लायी तो चलेगा,
लेकिन जाते समय, उनको साथ ले जाना।
जिंदगी कल फिर आना ॥

आते समय बचपन की यादें,
माँ की लोरी और पापा की डांट लाना।
प्रियतमा का लड़ना, झगड़ना, रूठना मनाना साथ लाना,
जिंदगी कल फिर आना ॥

अगर मैं रूठा रहूँ तो मुझे मनाना,
हँसाना, खेलाना फिर तू जाना।
पर जाते समय कल आएगी,
इसका वादा कर के जाना।
जिंदगी कल फिर आना ॥

तेरे लिए हमने कितने लम्हों को छोड़ा है,
फिर तेरे से रिश्ता जोड़ा है।
आते समय उन लम्हों को साथ लाना,
जिंदगी कल फिर आना ॥

गुड्डू कुमार शर्मा
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

सूक्तियां

1. हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। इससे सारे भारत को एक किया जा सकता है।

- **महर्षि दयानंद सरस्वती**

2. राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।

- **महात्मा गांधी**

3. प्रांतीय ईर्ष्या-द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी से नही।

- **नेताजी सुभाषचंद्र बोस**

4. राष्ट्र भाषा किसी व्यक्ति या प्रांत की संपत्ति नहीं है, इस पर सारे देश का अधिकार है।

- **सरदार पटेल**

5. सभी देशवासियों को हिंदी सीखनी चाहिए। इसके द्वारा भाव- विनिमय से सारे भारत को सुविधा होगी।

- **चक्रवती राजगोपालाचार्य**

6. राष्ट्र की एकता को यदि बनाकर रखा जा सकता है तो उसका माध्यम हिंदी ही हो सकती है।

- **सुब्रह्मण्य भारती**

7. जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

- **डॉ. राजेंद्र प्रसाद**

8. हिंदी भाषा का अर्थ है, राष्ट्र और जाति की उन्नति।

- **रामवृक्ष बेनीपुरी**

9. हिंदी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है।

- **माखनलाल चतुर्वेदी**

10. हिंदुस्तान के लिए देवनागरी लिपि का ही व्यवहार होना चाहिए, रोमन लिपि का व्यवहार यहाँ हो ही नही सकता।

- **महात्मा गाँधी**

11. राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।

- **महात्मा गाँधी**

12. भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।

- **नरेंद्र मोदी**

13. भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

- **अमित शाह**

14. हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

- **मदन मोहन मालवीय**

15. हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है।

- **पुरुषोत्तम दास टंडन**

16. हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।

- **सुमित्रानंदन पंत**

17. हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है।

- **डॉ सम्पूर्णानन्द**

18. भारतीय भाषाएँ नदियाँ है और हिंदी महानदी।

- **रवीन्द्रनाथ ठाकुर**

19. हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है।

- **मौलाना हसरत मोहानी**

20. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

- **जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर**

21. शिक्षा जब पराई भाषा में दी जाती है, तब केवल शब्दों को याद रखने का बोझ ही विद्यार्थी के दिमाग पर नहीं पड़ता, बल्कि विषय को समझने में भी उसे बड़ी कठिनाई होती है। यह स्पष्ट है कि जहां रटने की शक्ति बढ़ती है, वहाँ समझने की शक्ति मंद पड़ जाती है।

- **महात्मा गाँधी**

<u>संकलन</u> -

देवेंद्र सिंह
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

आत्मविश्वास सफलता की कुंजी है

आत्मविश्वास मानव चरित्र का मौलिक गुण तथा उसके जीवन पथ का प्रबल संबल है। यह मनुष्य को घर परिवार व समाज के संस्कार से मिलता है तथा शिक्षण अभ्यास से वह विकसित होता है जो आत्मविश्वास का अलख जगाकर जीवन के मार्ग पर आगे बढ़ता है, उसके समक्ष आपदाओं के पर्वत ढह जाते हैं और मंजिल सदा उसकी प्रतीक्षा करती रहती है। जिसके पास आत्मविश्वास का बल है, वह पराजय के क्षणों में भी विचलित नहीं होता, बल्कि नए संकल्प, नए उत्साह से आगे बढ़कर अंततः विजय प्राप्त करता है। वस्तुतः आत्मविश्वास के अंकुर से प्रयत्न का पौधा उगता है और प्रयत्न के लहलहाते पौधे पर ही सफलता के मधुर फल लगते हैं।

मनुष्य कितनी भी मेहनत कर ले, परंतु उसे जब तक अपने आप पर भरोसा नहीं होता है। तब तक वह सफल नहीं हो सकता। जो अपने आप पर विश्वास रखता है उसे अंदर से ही अलौकिक शक्ति का बल मिलता है। जन्म से ही कोई महान अथवा गुणवान पैदा नहीं होता, लेकिन दृढ़तापूर्वक अभ्यास से हर एक अपने आप में गुण पैदा कर सकता है।

बहुत से विचारक ऐसे हुए हैं जिन्हें बचपन में बहुत डर लगता था, परंतु अच्छी संगत वह अच्छे विचारों से उनमें आत्मविश्वास जागा और वे ऐसे निडर बने की दुनिया की कोई ताकत उन्हें डरा नहीं सकी। मनुष्य का मन चंचल होता है इसलिए बुद्धि भी स्थिर नहीं रहती। बिना बुद्धि स्थिर हुए आत्मविश्वास नहीं आ सकता, इसलिए सत्पुरूषों की संगत अति आवश्यक है। अस्थिर बुद्धि वाला व्यक्ति सूखी पत्ती की तरह हवा में उड़ने वाला, सदैव दूसरों पर निर्भर रहता है परंतु जिसकी पकड़ अपने विचारों पर मजबूत होती है वह अपने बल पर चलता है। आत्मविश्वास पर खड़ा किया गया भवन हमेशा सुरक्षित रहता है। निःसंदेह आत्मविश्वास अनेक रोगों की दवा है। जहां व्यक्ति अनेक प्रकार की भूत भविष्य की चिंताओं में घुटता रहता है और परिश्रम से जी चुराता है, वहीं आत्मविश्वास को किसी प्रकार की असफलता का मुंह नहीं देखना पड़ता|

स्नेहा कुमारी
स्टेनोग्राफर, एस/02732
तटरक्षक वायु भंडार डिपो (भुवनेश्वर)

तटरक्षक के सैनिक

लहरों से जो ना डरे कभी
तुफानों में जो बड़े सभी
तटीय सुरक्षा का भार लिए
वो तटरक्षक के सैनिक ||

आक्रमणों से हरदम जूझते हुए
कठिनाइयों का सामना करते हुए
जो देश की रक्षा में तत्पर
वो तटरक्षक के सैनिक ||

हम घरों में सुख से सोते,
वो घर की याद की
व्यथा में भी खुश होते,
देश की सेवा मे सुख ढूँढते हुए
वो तटरक्षक के सैनिक ||

ऐसे वीरों को शत-शत नमन,
जिनके कारण मिला सुखी जीवन,
तटीय सीमा पर जो तैनात हैं,
वो तटरक्षक के सैनिक ||

शुभम कुमार
नाविक (आर पी)
भारतीय तटरक्षक जिला मुख्यालय -8
हल्दिया

विनम्रता लोहे के द्वार खोलती है

विनम्रता शब्द का मतलब है अहंकार न करना और अपनी, कामयाबी, काबिलियत और धन-दौलत के बारे मे शेखी न मारना। एक पुस्तक में विनम्रता का अर्थ अपनी सीमाओं के अंदर रहना भी बताया गया है। एक विनम्र व्यक्ति अपनी सीमाओं के अंदर रहना जानता है। वह, वही करता है, जो उसे करना चाहिए और जो उसके बस में हैं। एक अंग्रेज कवि जोसफ एडिसन ने लिखा, विनम्र होना सबसे बड़ी खूबसूरती है। हम इंसानो मे विनम्रता का गुण व्यक्तित्व के महानता का लक्षण है । जो व्यक्ति जितना अधिक विनम्र है, वह उतना ही अधिक महान है। महान व्यक्तियों का आभूषण सिर्फ विनम्रता ही है। विनम्रता का गुण मनुष्य के मन में कोमलता, धैर्य, उदारता के भावों को सहेज कर रखता है |

जीवन अनेक रंगों से भरा है। कभी दुःख है तो कभी सुख, कभी ह्वास है तो कभी रुदन, कभी सौन्दर्य का बोध होता है तो कभी वीभत्स रूप सामने आता है। ऐसे में मनुष्य को अपने मन पर नियंत्रण रखना चाहिए। सब के साथ प्रेमपूर्वक वार्तालाप करने से अपनी स्वयं की छवि बनती है।

कबीर दास जी का एक दोहा है -

"ऊँचा पानी न टिकै, निचे ही ठहराय |
नीचा होय जी भरि पिये, ऊँच पियासा जाय ॥"

इसका अर्थ है कि पानी ऊँचाई पर नहीं टिकता, वह नीचे की तरफ बहता है। इसलिए जिस व्यक्ति को पानी पीना होता है, उसे गर्दन नीचे करनी पड़ती| जो गर्दन ऊँची रखता है, उसे पानी भी नसीब नहीं होता ।

आयुष रस्तोगी
नाविक (प)
16161- एल
भा. त.र. पो. अनमोल

तटरक्षक शक्ति

प्राचीन काल से सागर कुबेर की अनमोल ख़ान है
इसकी सुरक्षा तटरक्षक हल्दिया का अरमान है,

हमारी संस्कृति संसार की पहचान है
बीत गया बचपन अब तो हम तटरक्षक के जवान हैं,

वीर बाँका नाविक गगन में चेतक तैयार है
जल पर होकर आज का वीर पोत हनुमान है,

हर चुनौती स्वीकार करना ही हमारी शान है
वयम् रक्षाम: का नारा ही हमारी शान है,

दुश्मनों को सबक सिखाना हमारा वर्तमान है
वरुण देवता की सेवा करना ही तटरक्षक की आन है ....

अखिलेश कुमार
अधिकारी (एम ई)
भा. त. पो. अमृत कौर

हिन्दी भाषा

अंगेजी जो केवल धन की भाषा बोल सकती थी,
न कि बाजार में वस्तु का केवल मोल करती थी।
जुड़ी काम से इसलिए बनी वो मान की भाषा,
बनी वो आज पूरे विश्व में अभिमान की भाषा।।

हिन्दी थी जो मन के ताले खोल सकती थी,
हमारी आत्मा और ज्ञान का पथ खोल सकती थी।
बनाकर राज की भाषा बहुत अच्छा किया तुमने,
हटा के काज से इसको बहुत गच्चा दिया तुमने।।

बना लो फिर से इसको तुम व्यापार की भाषा,
बना लो फिर से इसको तुम परिवार की भाषा,
बना लो फिर से इसको तुम अपने प्यार की भाषा,

क्योंकि अगर भाषा मरी, तो तुम भी प्यारे बच नहीं सकते।
भले ही हो करोड़ों गुण, तुम कुछ रच नहीं सकते।।
महज भाषा नहीं, ये माँ हमारी हमको रचती है।
बचेगी लाज जब इसकी, हमारी लाज बचती है।।

और छोड़ा अगर इसको, तो तुम भी टूट जाओगे।

और दुनिया नहीं, तुम खुद ही खुद से, रुठ जाओगे।।

क्योंकि कहा गया है-

" जिसका न निज गौरव, न निज देश पर अभिमान है

वह नर नहीं नर पशु निरा है और मृतक समान है"

तो उठो ! जगो ! करो ! स्वीकार इसको,

प्यार दो, सम्मान दो, इसको ।

फिर तुम नहीं सारा संसार याद करेगा इस देश की गाथा

सदियों पुरानी गाथा है इस देश की गाथा,

और आज की गाथा, सदियों तक सुनाएगा

उप समादेशक गीतिका सक्सेना
भारतीय तटरक्षक जिला मुख्यालय -8, हल्दिया

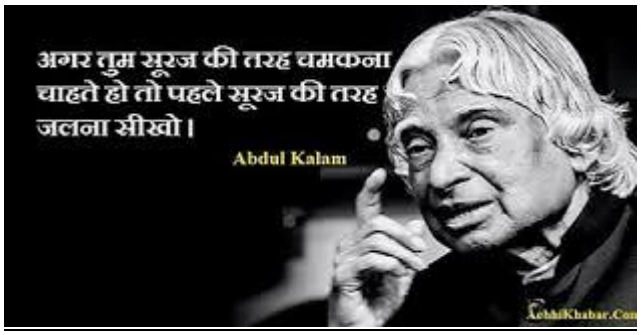

दो पल की जिंदगी है

दो पल की जिंदगी है,
आज बचपन, कल जवानी,
परसो बुढ़ापा, फिर खत्म कहानी है।

चलो हस कर जिये, चलो खुलकर जिये,
फिर ना आनें वाली यह रात सुहानी,
फिर ना आनें वाला यह दिन सुहाना|

कल जो बीत गया सो बीत गया,
क्यों करते हो आने वाले कल की चिंता,
आज और अभी जिओ, दूसरा पल हों ना हों|

आओ जिंदगी को गाते चलें,
कुछ बातें मन की कतरते चलें,
रूठों को मनाते चलें।

आओ जीवन की कहानी प्यार से लिखते चलें,
कुछ बोल मीठे बोलते चलें,
कुछ रिश्ते नये बनाते चलें

क्या लाये थे क्या ले जाएँगे,
आओ कुछ लुटातें चलें,
आओ सब के साथ चलते चलें,
जिंदगी का सफर यूँ ही काटते चलें

सूरज सिंह
नाविक (आर ओ)
13873-एल
700 वायु जत्था

सपनों में रख आस्था

सपनों में रख आस्था कर्म तू किए जा,
त्याग से ना डर आलस का परित्याग किए जा।

गलती कर ना घबरा,
गिरकर फिर हो जा खड़ा।

समस्याओं को रास्तों से निकाल दे,
चट्टान भी हो तो ठोकर से उछाल दे।

रख हिम्मत तूफानों से टकराने की,
जरूरत नहीं है किसी मुसीबत से घबराने की।

जो पाना है बस उसकी एक पागल की तरह चाहत कर,
करता रह कर्म मगर साथ में खुदा की इबाबत भी कर।

फिर देख किस्मत क्या-क्या रंग दिखलाएगी,
तुझको तेरी मंजिल मिल जाएगी, मंजिल मिल जाएगी।

जतिन कुमार प्रिंस
नाविक (एम ई), 16207-पी
भारतीय तटरक्षक पोत अनमोल

शिक्षक

जीवन में जो राह दिखाए,
सही तरह चलना सिखाए।
माता-पिता से पहले आता,
जीवन में सदा आदर पाता।

सबको मान प्रतिष्ठा जिससे,
सीखी कर्तव्य निष्ठा जिससे।
कभी रहा न दूर मैं जिससे,
वह मेरा पथप्रदर्शक है जो।
मेरे मन को भाता,
वह मेरा शिक्षक कहलाता।

कभी है शांत, कभी है धीर,
स्वभाव में सदा गंभीर,
मन में दबी रहे ये इच्छा,
काश मैं उस जैसा बन पाता,
जो मेरा शिक्षक कहलाता।

जतिन कुमार प्रिंस
नाविक (एम ई), 16207-पी
भारतीय तटरक्षक पोत अनमोल

दोस्ती

लो आज फिर दोस्ती की याद आयी है

बनते बिगड़ते रिश्तों की तस्वीरें फिर सामने आयी हैं

पहले दोस्तों से झगड़ते थे

उनको मनाते भी थे

और उनसे मनवाते भी थे

पर अब तो ना रूठना होता, ना मनाना

बचपन की हर वो लड़ाई, इक नई ईट थी दोस्ती के नींव की

अब तो दिल की टीस को दबाकर भी मुस्कुराना होता है

आज तो सिर्फ चमक ही दिखती है

जिस और फायदा उसी छोर याराना होता है

मतलब का मिलना और मतलब से ही काम होता है

तस्वीर भले ही दोस्ती की दिखे पर चेहरे दोस्तों के नहीं होते

रंग भले ही भाने वाले हों, पर उनमें वो भाव नहीं होते

इन अनुभवों के पन्ने पलटते-पलटते

फिर पुरानी किताबें खुलती हैं

उन किताबों मैं से कई बेशकीमती किताबें भी बोल उठती हैं

नई किताबों की आँधी से घबरा ना जाना

पुरानी का साथ अब भी है, ये भूल ना जाना

जो तेरा था वो अब भी तेरा ही है

जो तेरा हो न सका, वो कभी तेरा था नहीं

जिसने तुझे रुलाया वो खुद ही ये समझ ना सका

उसने धोखा तुझे दिया या खुद ही कुछ खो चुका

इस दोस्ती में हार - जीत नहीं, समझ लो ए ना समझो

जिस दिन दोस्ती की सही कीमत समझ जाओगे

पर तब शायद हम आगे बढ़ चुके होंगे

तुम्हें संभालने को जो हाथ बढ़ेंगे

क्या पता वो भी मतलब के ही होंगे ..... ।

एकता गुप्ता
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, एस/002276
तटरक्षक जिला मुख्यालय सं -8

बेरोजगारी

खाली कंधों पर थोड़ा-सा भार चाहिए
बेरोजगार हूँ साहब रोजगार चाहिए

ज़ेब में पैसे नहीं हैं डिग्री लिए फिरता हूँ
दिनों-दिन अपनी नज़रों में गिरता हूँ
कामयाबी के घर में खुले किवाड़ चाहिए
बेरोजगार हूँ साहब रोजगार चाहिए

टैलेंट की कमी नहीं है भारत की सड़कों पर
दुनिया बदल देंगे भरोसा करो इन लड़कों पर
लिखते-लिखते मेरी कलम तक घिस गई
नौकरी कैसे मिले जब नौकरी ही बिक गई
नौकरी की प्रक्रिया में अब सुधार चाहिए
बेरोजगार हूँ साहब रोजगार चाहिए

दिन-रात मेहनत बहुत करता हूँ
सूखी रोटी खाकर ही चैन से पेट भरता हूँ
भ्रष्टाचार से लोग खूब नौकरी पा रहें हैं
रिश्वत की कमाई ख़ूब मज़े से खा रहें हैं
नौकरी पाने के लिए यहाँ जुगाड़ चाहिए
बेरोजगार हूँ साहब रोजगार चाहिए ।

सहायक समादेशक आनंद प्रकाश
भा. त. र. पो. अमृत कौर

जिंदगी

प्यास लगी थी गज़ब की...मगर पानी में जहर था ...
पीते तो मर जातें और ना पीते तो भी मर जातें...
बस यही दो मसले, जिंदगी भर ना हल हुए।

ना नींद पूरी हुई, ना सपने मुकम्मल हुए!!!
वक्त ने कहा...। काश थोड़ा और सब्र होता!!!
सब्र ने कहा... काश थोड़ा और वक्त होता!!

शिकायत तो बहुत है तुझसे ए ज़िंदगी, पर चुप इसलिए हूँ कि,
जो दिया तूने, वो भी बहुतो को नसीब नहीं होता....

तेजराम जोरवाल
नाविक (आर ओ), 16525-एस
भारतीय तटरक्षक पोत अनमोल

लोगों ने कहा

लोगों ने कहा बेहिसाब हसरतें ना पालो,

जो मिला है, उसे सँभालो

तो मैंने कहा, जिंदगी मेरी एक डोर की खींचातानी है

एक सिरा ख्वाहिशों ने पकड़ रखा है और दूसरा औकात ने।

फिर लोगों ने कहा, चादर से तेरे पैर बाहर आ रहे हैं, तेरे ख़्वाब उसूलों से बड़े होते जा रहे हैं,

पर शायद मेरे सामर्थ्य ने उनके तजुर्बे की तौहीन कर दी।

मैं तो था भी अपने मां-बाप का लाड़ला,

माना कि मैं झुक जाता तो मसला आसान हो जाता,

मगर इससे मेरे किरदार का खून हो जाता।

सहायक समादेशक आनंद प्रकाश
1715-डी
भा. त. र. पो. अमृत कौर

महात्मा गाँधी

1. महात्मा गाँधी का परिचय देना सूर्य को दीया दिखाना है। वे हमारे देश के उन महापुरूषों में से एक थें, जिनसे राष्ट्रीय जीवन का नया इतिहास तैयार हुआ है। भारत की स्वतंत्रता उनकी ही अथक सेवाओं का शुभ फल है। हम उन्हें कैसे भूल सकते हैं, वे हमारे रोम-रोम में बसे हैं। भारत की मिट्टी से उनकी आवाज आ रही है, सारा आकाश उनकी अमर वाणियों से गूँज रहा है। वे राम, कृष्ण, बुद्ध, शंकर और तुलसी जैसे दिव्य पुरूषों की तरह घर-घर में बसे हैं।

2. महात्मा गाँधी का जन्म 02 अक्टूबर 1869 ई. में गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान में हुआ था। उनके पिता करमचंद गाँधी राजकोट रियासत के दीवान थे। उनकी माता ने उनका लालन पालन बड़े ही अच्छे ढंग से किया था। बालक गाँधी जिनका असली नाम मोहनदास करमचंद गाँधी था, उन पर उनकी धार्मिक माता का बड़ा गहरा प्रभाव था। वे आगे चलकर गाँधीजी नाम से प्रसिद्ध हुए।

उनकी शिक्षा गाँव के एक विद्यालय में शुरू हुई। सन् 1887 में उन्होंने इंट्रेंस की परीक्षा पास की। वे पहले पढ़ने - लिखने में बहुत तेज नहीं थे। उन्होंने स्वयं लिखा है कि मैं बहुत झेंपू लड़का था, मेरी किसी से मित्रता नहीं थी। स्कूल में अपने काम से काम रखता था। घंटी बजते ही स्कूल पहुँच जाता और बंद होते ही घर चल देता। किसी अन्य लड़के से बात करना मुझे अच्छा नहीं लगता था क्योंकि मुझे डर लगा रहता था कि कहीं कोई मुझसे दिल्लगी न कर बैठे। बीड़ी पीना, चोरी करना, जेब से पैसे चुराना, मांस खाना इत्यादि बुरी आदतों के वे शिकार हो गये थे। लेकिन आगे चलकर गांधी जी ने इन सारी बुराइयों को एक-एक कर छोड़ दिया। सन् 1891 ई. में बैरिस्टरी पास कर वे इंग्लैंड से भारत लौटे। बम्बई में वे बैरिस्टर हुए, लेकिन उनकी बैरिस्टरी नहीं चली।

3. एक बार वे एक मुकदमें के काम से दक्षिण अफ्रिका गये। वहाँ उन्हें बड़ी-बड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ा। उन्होंने देखा कि वहाँ भारतीयों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं हो रहा है। गाँधी जी को बड़ी ठेस लगी। उन्होंने वहाँ सत्याग्रह शुरु किया और उन्हें सफलता भी मिली।

4. गाँधी जी सन् 1914 में भारत लौटे। उन्होंने गरीबी और गुलामी देखी अंग्रेजों के अत्याचार देखें और उनका मनमाना शासन देखा। उनकी आँखें खुली और उन्होंने देश सेवा का व्रत लिया। देश को अंग्रेजों से आज़ाद कराने की प्रतिज्ञा ली और तब से वे जुट गये इस महायज्ञ से । सन् 1917 से वे अंग्रेजों के अत्याचारों का खुलकर विरोध

करने लगे। चंपारण में उन्होंने अंग्रेजों के अत्याचारों का खुलकर विरोध किया एवं पहला सत्याग्रह आंदोलन छेड़ा, वे किसानों के नेता बने । देश के कोने- कोने में गये। जनता ने उनका स्वागत किया। सन् 1942 के महान क्रांति '**करो या मरो**' के नारे से सारा देश जाग पड़ा। गाँधीजी के साथ बहुत से नेता जेल में बंद कर दिये गये। लेकिन जनता रुकी नहीं, झुकी नहीं। अंत में अंग्रेजों ने लाचार होकर देश को 15 अगस्त 1947 ई. को भारत और पाकिस्तान में बाँटा दिया। इससे गाँधीजी बड़ें दु:खी हुए ।

5. देश को आज़ाद कराने वाले राष्ट्रपिता बापू को देश के ही एक अभागे नाथूराम गोडसे ने 30 जनवरी 1948 की शाम को पिस्तौल चलाकर मार डाला। सारी मानवता का नेता उठ गया। हम अनाथ हो गये लेकिन गाँधी जी की जय आज भी हमारे प्राणों में नया जोश और उत्साह भरती है। आज बापू की कहानी युग-युग की कहानी बन गयी है। वे मरकर भी अमर हैं।

कुसुम सिंह
अवर श्रेणी लिपिक
तटरक्षक जिला मुख्यालय-8

हर चमकती चीज सोना नहीं होती

हमें दिखावे पर नहीं जाना चाहिए क्योंकि दिखावे अक्सर भ्रामक होते हैं। अच्छे कपड़े पहनने वाला व्यक्ति सज्जन ही हो यह आवश्यक नहीं है। एक ऐसे व्यक्ति के बारे में भी यही सच है, जिसकी मीठी बातें आपको पहली नजर में आकर्षित कर सकती हैं, लेकिन जिसकी हरकतें आपको बाद में दूर कर सकती हैं। दुष्ट लोग मीठे बोलों के सहारे सुन्दर वेशों में अपने सच्चे आशय को छिपा लेते हैं। सोने की पहचान सिर्फ उसकी चमक से नहीं होती। इसकी आंतरिक शुद्धता इसके मूल्य को निर्धारित करती है। ऐसा ही हर व्यक्ति के साथ भी होता है। किसी व्यक्ति का मूल्य उसके आचरण से निर्धारित होता है। किसी व्यक्ति की सुंदरता उसके चरित्र में निहित होती है। हमें किसी व्यक्ति की पहचान उसके रंग रूप, वेशभूषा, बातचीत या किसी भी बाहरी चीज के आधार पर नहीं करनी चाहिए। जिस प्रकार पारस पत्थर से सोने का मूल्य निकलता है, उसी प्रकार मनुष्य का मूल्य उसके कर्मों और इरादों से मापा जाता है। सबसे अच्छा सिद्धांत यही है कि जब तक हम किसी के निहित गुणों को नहीं देख लेते तब तक दोस्त बनाने में धीरे-धीरे आगे बढ़ें। किसी व्यक्ति को उसकी बात पर कभी न लें। उसे देखें, उसका परीक्षण करें और स्थिर रिश्ते में प्रवेश करने से पहले उसकी योग्यता सुनिश्चित करें।

राहुल कुमार
अवर श्रेणी लिपिक, एस/02353
भारतीय तटरक्षक अवस्थान फ्रेज़रगंज

दैनिक जीवन
में हिन्दी का
प्रयोग करें

लघु कहानी - बाप – बेटा

बेटा अपने बूढ़े पिता को अनाथ आश्रम छोड़ कर वापस आ रहा था, तभी उसकी पत्नी ने फोन किया और कहा, 'अपने बाप को यह भी कह दो की त्योहार पर भी घर आने की आवश्यकता नहीं है, अब वहीं रहें और हमे चैन से जीने दें।'

बेटा वापस मुड़ा और अनाथ आश्रम गया, तो उसने वहाँ देखा कि उसके पिताजी आश्रम के प्रबंधक के साथ खुश, गप्पों मे व्यस्त हैं, जैसे बरसों से एक-दूसरे को जानते हों। बेटे ने प्रबंधक से पूछा, 'महोदय, आप मेरे पिता को कैसे और कब से जानते हैं?'

उसने मुसकुराते हुए उतर दिया, 'जब ये अनाथ आश्रम से एक बच्चे को गोद लेने आए थे।' ये सुनकर बेटा स्तब्ध रह गया, उसके आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली।

विद्या सागर
प्रधान नाविक, 03084-पी
भारतीय तटरक्षक अवस्थान फ्रेज़रगंज

लोग पूछते हैं

अगर बैठें हो उदास कभी तो उदासी की वजह पूछ लेते हैं
कहते है, उदासी अच्छी नहीं,
जरा सा हँस ले तो, मुस्कुराने की वजह पूछ लेते हैं।

अगर बैठें हो खामोश कभी तो खामोशी की वजह पूछ लेते हैं
कहते है, खामोशी अच्छी नहीं,
अगर कोई सवाल पूछ लें तो, सवाल पूछने की वजह पूछ लेते हैं।

लोगों का काम है पूछना
अगर कभी कोई कुछ ना पूछे,
तो ना पूछने की भी वजह पूछ लेते हैं ।

बलवंत कुमार सिंह
उत्तम नाविक
12994-एम
भारतीय तटरक्षक अवस्थान फ्रेज़रगंज

माँ का क़र्ज़

मैं तेरी आँख का तारा था ,मैं तेरा राजदुलारा था,
पर आज सर्वत्र उदासी है ,आँखें तेरे दर्शन को प्यासी हैं ,
वो प्यारा ,न्यारा सा मेरा गाँव, थी जिसमें तेरे आँचल की छांव ,
वो यादें बहुत तड़पाती हैं ,आँखें मेरी नित भर आती है

मेरे जीवन की कस्तूरी थी, तुम्हारी यादें हर सांस में बसती थी
जीवन को आस मिला करती थी ,जब देख मुझे तुम हसती थी
यह दुनिया बड़ी तड़पाती है ,हर कदम में बड़ा सताती है,
आँखें हमेशा बह जाती है ,जब याद तुम्हारी आती है

तुम करुणा की मूर्ति थी ,मेरी हर ख्वाहिश को पूरा करती थी,
मैं डाल-डाल तुम पात-पात ,हमारे कदमों में कितनी स्फूर्ति थी
जो मांगता था वो मिल जाता था ,तेरी रहमत का हमेशा साया था
आज अवलंब खड़ा तेरा वो त्याग मेरी माया था

तुम दुर्गा थी ,तुम काली थी, मेरी खुशियों की प्याली थी
सारे कष्टों को हर लेती ,जग से मेरी रखवाली थी,
तेरी आँचल के छांव बिना ,ना जाने कैसे रह पाऊंगा
तेरी ममता का जो कर्ज़ है ,जीवन भर तो दूर ,मर कर भी न उतार पाऊंगा

मुहम्मद अबू
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
तटरक्षक जिला मुख्यालय संख्या-7
पारादीप ,ओड़िशा

हमारा किसान

जब जब बिजली चमकती है ,दिल उसका धड़कता है
हाँ वो किसान है ,लोगों का पेट भरता है
लोगों के जीवन की भूख-प्यास मिटाते मिटाते
जीवन उसका नीरस हो जाता है
वो किसान खुद के लिए कुछ न कर पाता है

मेहनत उसकी ,फसल उसकी
लेकिन मंडी में दाम कोई और काट ले जाता है
न कोई त्योहार ,न कोई छुट्टी
आराम हराम उसका हो जाता है
कहलाता है जग का अन्नदाता
लेकिन खुद का भी पेट न भर पाता

धरती का सीना चीरकर ,
जब वो हल चलाता है
चीख उठती है आकाश देखकर
तपती दोपहर में भी जब वह मुस्कुराता है

न कोई आशा ,न कोई तमन्ना करता है ,
हर दम करता रहता है काम
सबकी मिट सके भूख
यही है उसका सम्मान

मुहम्मद अबू
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
तटरक्षक जिला मुख्यालय संख्या-7
पारादीप ओड़िशा

सबसे अच्छा मेरा मोबाईल

बहुत दिनों के इंतजार और जाँच पड़ताल से
जब मैंने लिया, एक महँगा स्मार्टफोन ,
क्या गजब है, इसके फिचर्स ,एपस एवं गेम
नहीं मुझे कोई दिखाई देता, पास मेरे खड़ा है कौनI
एपस में ही डूब गया हूँ,
टचस्क्रीन से हमेशा टच में है मेरी उँगलियाँ,
खाना-पीना भूल गया हूँ,
बस नेट में रहता हूँ, डूबा दिन हो या रातI

सोशल मिडिया पर बातचीत ,
फोटो सारे डाउनलोड अपडेट है I
खाना-पीना भूल गया, मोबाइल पर दिखते है,
तरह-तरह के स्वादिष्ट पकवानI

एक दिन भक्ति लिंक पर ,
ढूंढते हुए गफलत हुई,
सज्जन के शिक्षा के बदले, सुंदर कन्या प्रकट हुई I

न जाने ,अचानक पहुँच गई इसी समय पत्नी,
उसे देखकर बिफर गई ,मेरे उँगलियाँ चिपकी रही,
मैंने बोला देखो इस विज्ञापन में यह बाला आई है I
शांत हो जाओ देवी, यह तो तुम्हें शायद क्रोध दिलाने आयी है I

कहा पत्नी ने छोड़ो मोबाईल को
बाला नहीं यह बला आई हैI
मोबाईल के संग अपने घर में,
साथ यह कैसी आफत आयी हैI
बचने मोबाईल के अतिप्रयोग से,
यह कैसा तौबा इस बार हैI

यह तो एक इंटरनेट एक भूलभुलैया,
सोचने बिना काम इसमें टच करना है बेकारI

टी एस डोगरे
अधिकारी (आर ओ)
तटरक्षक जिला मुख्यालय संख्या-7
पारादीप ,ओड़िशा

हिम्मत हारे मत बैठो

जीवन में कुछ करना है, तो मन को मारे मत बैठोI
आगे– आगे बढ़ना है, तो हिम्मत हारे मत बैठोI
चलने वाला मंजिल पाता ,बैठा पीछे रहता है I
ठहरा पानी सड़ने लगता, बहता निर्मल होता है I
पाँव मिले चलने की खातिर, पाँव पसारे मत बैठो I
आगे-आगे बढना है ,तो हिम्मत हारे मत बैठोI

तेज दौड़ने वाला खड़ा रहा, दो पल चलकर बैठ गया
धीरे-धीरे चलकर कछुआ ,देखो बाजी मार गया I
चलो कदम से कदम मिलाकर, दूर किनारे मत बैठोI
आगे-आगे बढना है ,तो हिम्मत हारे मत बैठोI

धरती चलते तारे चलते, चाँद रात भर चलता है I
किरणों को उपहार बाँटने, सूरज रोज निकलता है I
हवा चले तो महक बिखेरे, तुम भी प्यारे बन महको
आगे-आगे बढना है ,तो हिम्मत हारे मत बैठोI
जीवन में कुछ करना है तो, तो हिम्मत हारे मत बैठोI
आगे-आगे बढना है ,तो हिम्मत हारे मत बैठोI

कुकुमान
उत्तम यांत्रिक (रेडियो)
तटरक्षक जिला मुख्यालय संख्या-7
पारादीप

जीवन एक चुनौती है स्वीकार करो

जीवन एक चुनौती है स्वीकार करो
यहाँ टेढ़ी-मेढ़ी राहें है स्वीकार करो|
जो हार जाए हम वो पथ के राही नहीं,
हम में एक ऊर्जा विद्यमान है स्वीकार करो||

हे सखी! हमारा प्रबल कर्म प्रधान है,
तेज लिए नित चलना हमारा काम है|
मनचाही ऐसी कोई उड़ान भरों ,
उत्साहित मन हो के समाज का कार्य करो||

है ऊर्जा से भरपूर हमारा जीवन ये,
कर्म की ताप सदा हो इसमें जलती रहे|
भारत के वीरों से सदा ही सीखा है ये,
अपनी ऊर्जा का कभी भी ना दुरुपयोग करो||

भारत की भूमि सदा से ही महान है ,
हर एक चुनौती के लिए सदा से तैयार है|
हे जन्म भूमि तुझे मैं प्रणाम करूँ ,
मेरे रग-रग में तू ही तो विद्यमान है||

जो हार जाए हम वो पथ के राही नहीं,
हम में एक ऊर्जा विद्यमान है स्वीकार करो||

- दीपक कुमार पाढ़ी
तटरक्षक जिला मुख्यालय संख्या-7,
पारादीप ,ओड़िशा

सैनिक

करोड़ों भारतीयों का अभिमान हूँ मैं
वैसे तो बहुत दयावान हूँ मैं
पर दुश्मन की मौत का सामान हूँ मैं
माँ भारती की रक्षा में प्राण न्यौछावर करता
देश का वीर जवान हूँ मैं ।

एक माँ से दूर हूँ तो एक मां के पास हूँ मैं
अपने देश की रहने की आस हूँ मैं
दुश्मन के दिल में भरता नाश हूँ मैं
दुश्मन के विफल करता हर प्रयास हूँ मैं
बस तू तो माँ दूर रहकर भी तेरे पास हूँ मैं ।

जानता हूँ तेरे लिए सबसे खास हूँ मैं
माँ बस उदास न हो मैं वापस जरूर आऊँगा
तुमसे किया जो वादा उसे निभाऊंगा
जिंदा न सही तिरंगा में लिपटा लाया जाऊंगा
पर वादा है तुझसे मैं वापस जरूर आऊँगा।

राहुल लामोरिया
नाविक (आर पी)
16239-एम
भारतीय तटरक्षक पोत अनमोल

लैटिन शब्द जो अंग्रेजी का हिस्सा हैं...

1. Ad hoc- (to this)- किसी विशेष मौके के लिए.

2. Ad infinitum- (to infinity)- अनंत तक.

3. Adnauseum- (to sickness)- किसी बात को तब तक दुहराना कि अगला परेशान न हो जाए.

4. Alumnus- (foster son)- किसी संस्थान से पढ़ कर निकलने वाले शख्स.

5. Bona fide- (with good faith)- सच्चा और संजीदा

6. Carpe diem- (seize the day)- वैसे लोग जो वर्तमान में रहते हैं और भविष्य की चिंता नहीं करते.

7. per se- (by itself)- खुद से.

8. Sic- (so)- यह इस बात का परिचायक है कि उद्धरित बात सीधी है, ताकि बात कहने वाले पर जोर हो.

9. Status Quo- (the state in which)- मौके पर वस्तुस्थिति

10. Modus Operandi- (Manner Of Working)- किसी व्यक्ति के काम करने का तौर-तरीका.

11. Alma mater- (nurturing mother)- स्कूल जहां से आप पढ़ के निकले हों.

12. Per- (by)- हर किसी के लिए

13. Per Capita- (by heads)- हर शख्स के लिए; जनसंख्या के मामले में.

14. I.E. (ID EST)- (that is)- जिस बात का जिक्र पहले ही हो चुका हो उसे फिर से लिखने के दौरान बचने के लिए.

15. Inter Alia- (amongst other things)- कई संभावनाओं के बीच में से एक उदाहरण

16. E.G. (Exempli Gratia)- (for example)- किसी उदाहरण के लिए या फिर जिसे पहले ही कहा जा चुका हो.

17. Via- (through)- किसी के माध्यम से.

18. CV- (curriculum vitae) (course of life)- किसी शख्स का शैक्षणिक व प्रोफेशनल ब्यौरा. नौकरी के लिए अप्लाई करने पर.

19. Ergo- (therefore)- परिणामस्वरूप

20. De facto- (from deed)- वाकई में या फिर चलन में, बिना किसी लीगल स्टैंड के भी कार्यरत.

21. De jure- (from law)- अधिकारस्वरूप, कानूनन.

22. Persona Non Grata- (Unacceptable Person)- ऐसा शख्स जिससे लोगों की घोर नापसंदगी हो.

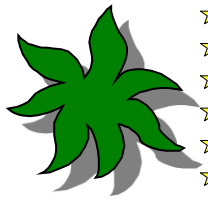

एक से सौ तक हिंदी में गिनती

एक	दो	तीन	चार	पाँच	छह	सात
आठ	नौ	दस	ग्यारह	बारह	तेरह	चौदह
पंद्रह	सोलह	सत्रह	अठारह	उन्नीस	बीस	इक्कीस
बाईस	तेईस	चौबीस	पच्चीस	छब्बीस	सत्ताईस	अट्ठाईस
उनतीस	तीस	इकतीस	बत्तीस	तैंतीस	चौंतीस	पैंतीस
छत्तीस	सैंतीस	अड़तीस	उनतालीस	चालीस	इकतालीस	बयालीस
तैंतालीस	चवालीस	पैंतालीस	छियालीस	सैंतालीस	अड़तालीस	उनचास
पचास	इक्यावन	बावन	तिरपन	चौवन	पचपन	छप्पन
सत्तावन	अट्ठावन	उनसठ	साठ	इकसठ	बासठ	तिरसठ
चौंसठ	पैंसठ	छियासठ	सड़सठ	अड़सठ	उनहत्तर	सत्तर
इकहत्तर	बहत्तर	तिहत्तर	चौहत्तर	पचहत्तर	छिहत्तर	सतहत्तर
अठहत्तर	उनासी	अस्सी	इक्यासी	बयासी	तिरासी	चौरासी
पचासी	छियासी	सतासी	अठासी	नवासी	नब्बे	इक्यानवे
बानवे	तिरानवे	चौरानवे	पचानवे	छियानवे	सतानवे	अठानवे
निन्यानवे	सौ					

हिंदी में दिनों के नाम (Names of Days)

सोमवार (Monday)	मंगलवार (Tuesday)	बुधवार (Wednesday)
बृहस्पतिवार/गुरुवार (Thursday)	शुक्रवार (Friday)	शनिवार (Saturday)
रविवार (Sunday)		

हिंदी में वर्ष के महीनों के नाम (Names of Months)

जनवरी (January)	फरवरी (February)	मार्च (March)
अप्रैल (April)	मई (May)	जून (June)
जुलाई (July)	अगस्त (August)	सितंबर (September)
अक्टूबर (October)	नवंबर (November)	दिसंबर (December)

समय (Time)

अपराहन (Afternoon)	आज (Today)	आधी रात (Mid-night)
कल (Tomorrow, Yesterday)	घंटा (Hour)	अर्द्धवार्षिक (Half-yearly)
तिमाही (Quarterly)	दशाब्दी, दशक (Decade)	दिन (Day)
दोपहर (Noon)	पक्ष, पखवाड़ा (Fortnight)	पूर्वाहन (Forenoon)
प्रात:, सुबह (Morning)	माह, महीना (Month)	क्षण, पल (Minute)
रात्रि, रात (Night	परसों (Two days after tomorrow)	
वर्ष, साल (Year)	शताब्दी, शती (Century)	संध्या, शाम (Evening)
सप्ताह, हफ्ता (Week)		

हिन्दी बोले जाने और लिखे जाने के आधार पर देश के राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को तीन क्षेत्रों में चिन्हित किया गया है

क क्षेत्र - बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड राज्य, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली राज्य और अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह

ख क्षेत्र - गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन और दीव तथा दादरा व नगर हवेली

ग क्षेत्र - क और ख क्षेत्र में शामिल नहीं किए गए अन्य सभी राज्य

अष्टम अनुसूची

(कुल 22 भाषाओं को अष्टम अनुसूची में शामिल किया गया है)

1. असमिया 2. उड़िया 3. उर्दू 4. कन्नड़ 5. कश्मीरी 6. गुजराती 7. तमिल 8. तेलुगु 9. पंजाबी 10. बंगला 11. मराठी 12. मलयालम 13. संस्कृति 14.सिंधी 15. हिंदी 16.मणिपुरी 17. नैपाली 18. कोंकणी 19. मैथिली 20. संथाली 21. बोडो 22. डोगरी

फोटो गैलरी

तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

THE ART OF LIVING
तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.)
कोलकाता
हिंदी कार्यशाला

Vivo V11Pro
AI Dual Camera

भारतीय तटरक्षक ज़िला मुख्यालय संख्या - 7
UTC
IST
हिन्दी पखवाड़ा 2022
समापन समारोह में आपका स्वागत है

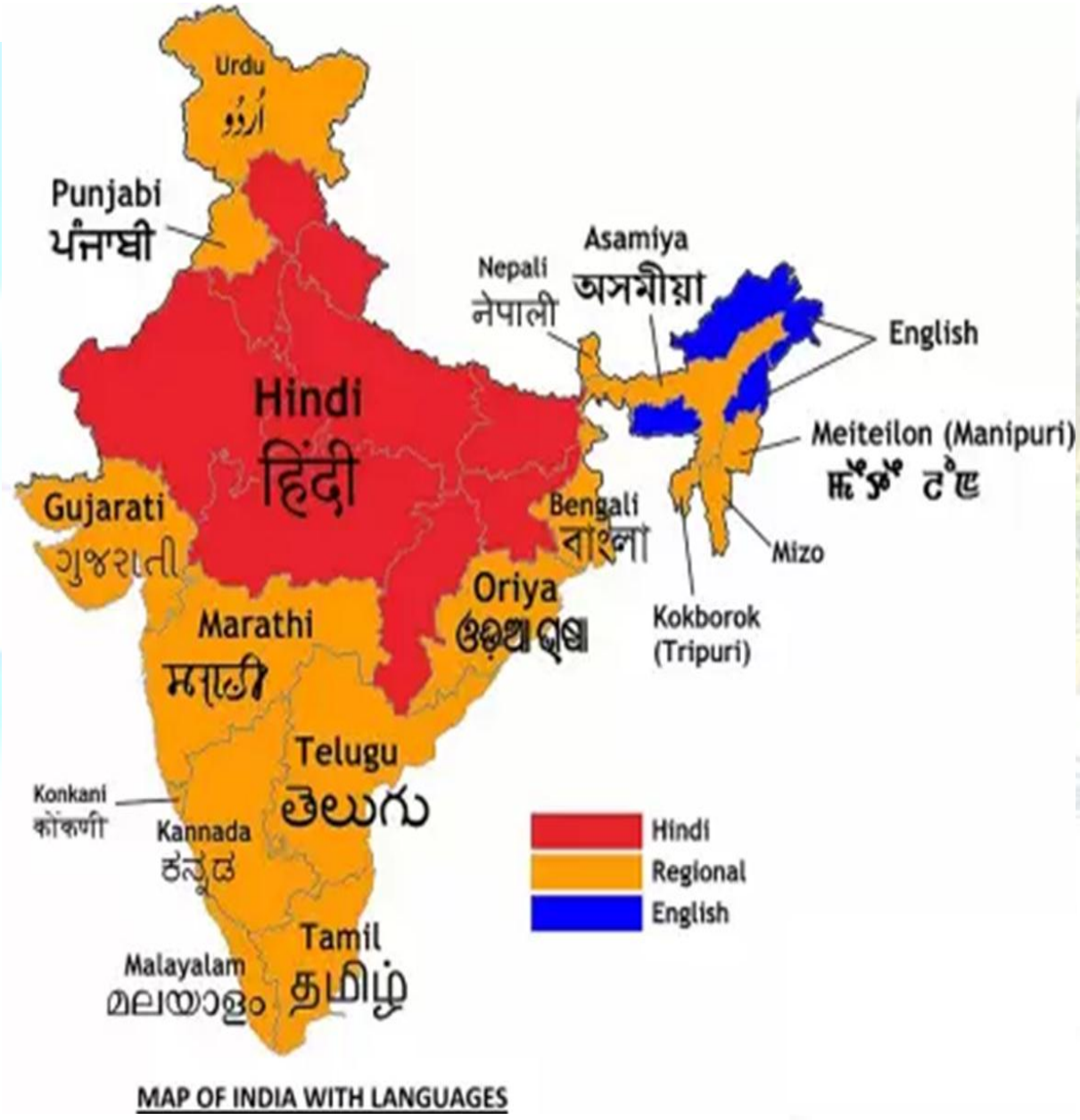

MAP OF INDIA WITH LANGUAGES

भारतीय तटरक्षक

यत्र तत्र सर्वत्र